



जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनाना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 6 रुपये



अकल बड़ी या भैंस

शिवकान्त दुबे और जयमाला सोनी



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

अकल बड़ी या भैंस : शिव कान्त दुबे और जयमाला सोनी
Akal Bari Ya Bhaisa : Shivkant Dubey and Jaimala Soni

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: रत्नाकर
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2003

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 6 रुपये

अकल बड़ी या भैंस



शिव कान्त दुबे और जयमाला सोनी



खख खख खैया

शिव कान्त दुबे

एक बार एक पंडित जी काशी से पढ़ कर आए। उन्होंने रास्ते के गाँव में रात्रि विश्राम किया। उस गाँव में एक अनपढ़ पंडित जी भी रहते थे। लेकिन उनका दबदबा था। लोग उन्हें लट्टु पांडे के नाम से पुकारते थे। पंडित जी थे भी

मोटी बुद्धि के।

उस रात को जब काशी से आए पंडित का लोगों को पता लगा तो उन्होंने कहा कि हमारे गाँव में भी एक पंडित हैं। लट्टु पांडे उनका नाम है। तो काशी से आए पंडित ने कहा कि आप उन्हें आदर सहित लाइए। हम उनके साथ शास्त्रों पर चर्चा (शास्त्रार्थ) करेंगे। लोग लट्टु पांडे को बुला लाये। दोनों ने एक दूसरे को नमस्कार किया। लट्टु पांडे मोटा साफ़ा बाँध कर, अपना लट्टु हाथ में लेकर सामने आ बैठे। उन्होंने शर्त रख दी कि जो भी हारेगा, उसे गाँव वाले पीट-पीट कर गाँव से निकाल देंगे। काशी के विद्वान ने शर्त स्वीकार कर ली। उन्हें अपनी विद्वता पर भरोसा था।

शास्त्रार्थ शुरू हुआ। लट्टु पांडे ने अपनी भाषा में प्रश्न किया खख-खख खैया? बेचारे विद्वान ने इस तरह का गूढ़ प्रश्न कभी न सुना था, न पढ़ा था। विद्वान हार गया। अब लट्टु पांडे ने जवाब दिया कि सबसे पहले (जमीन) जुते जुतैया। फिर (फसल) बुपे बुवैया। फिर (फसल) पके पकैया। इसके बाद कटे कटैया। इसके बाद (आटा) पिसे पिसैया। इसके बाद (रोटी) पुवै-पुवैया। तब खवै-खवैया (खाना)। इसके बाद कुल्ला करते वक्त (गला साफ करना) खख-खख खैया।

चारों ओर तालियाँ पिट गईं। लट्टु पांडे जीत गए। गाँव वालों ने पीट-पीट कर विद्वान को गाँव से निकाल दिया।

काशी वाले पंडित जी ने लोगों से पूछा तो पता लगा कि लट्टु पांडे, इसी तरह कई विद्वानों को अपमानित कर चुके हैं। खुद वे अँगूठा छाप हैं।



काशी के पंडित ने सोचा कि लट्ट पांडे को सबक जरूर सिखाना है। लट्ट पांडे की बड़ी-बड़ी मूँछें थीं। जाते समय उन्होंने गाँव वालों से कहा कि शास्त्रों में लिखा है कि यदि पूरण मासी के दिन एक पंडित दूसरे पंडित को हरा दे, तो जीते हुए पंडित की मूँछ का बाल अनाज में रखने से कभी अनाज नहीं खत्म होता। यह सुनते ही लोग दौड़ कर लट्ट पांडे के घर पहुँचे। देखते-देखते लट्ट पांडे की मूँछ उखाड़ ले गए। दर्द से कहराते रहे लट्ट पांडे।

१००

टेढ़ी खीर

एक आदमी अंधा था। वह एक जगह बैठा भीख माँगा करता था। सभी उसे सूरदास कह कर पुकारते थे। एक दिन उसका पड़ोसी उसके पास आकर बोला-भाई सूरदास आज मेरे यहाँ भोजन करने चलो-मेरे पिता का श्राद्ध है। सूरदास बोला-अच्छा! आज हमें क्या खिलाओगे? पड़ोसी बोला-बढ़िया खीर खिलाएंगे। सूरदास का पहले कभी खीर खाने का अवसर न आया था। उसने हैरत में भरकर बोला-खीर? पड़ोसी बोला-हाँ! सूरदास ने खुश होकर जानकारी के लिए पूछा-भाई खीर कैसी होती है? पड़ोसी ने कहा-सफेद। सूरदास ने फिर पूछा-सफेद





अक्ल बड़ी या भैंस

पुराने समय की बात है। एक थे सेठ जी और उनकी सेठानी। उनकी कोई संतान नहीं थी। और न ही होने की आशा थी। सेठ जी की उम्र 50 को पार कर गई थी।

एक दिन वे सो रहे थे। आधी रात के करीब चोर चोरी करने उनके घर में किसी तरकीब से किवाड़ों की सांकल निकाल कर घुस आए। खटर-पटर की आवाज सुनकर सेठ की नींद खुल गई। उन्होंने देखा कि 5 चोर घर की हर चीज खंगाल कर देख रहे हैं। सेठ ने सोचा कि अगर मैं चिल्लाकर पड़ोसियों को बुलाता हूँ तो ये चोर गला दबाकर फौरन मुझे मार देंगे। इसलिए अक्ल से काम लेना चाहिए।

सेठ ने सेठानी को पुकारा-अरी भागवान क्या सो गई इतनी जल्दी? सेठानी नींद में कुनमुनाती बोली-क्यों क्या कहते हो? सेठ बोला कि सुन जरूरी बात। कहीं भगवान ने अपने को एक बेटा दे दिया तो उसका नाम क्या रखेंगे? सेठानी

कस होत भाई? पड़ोसी बोला-बगुला जस। सूरदास ने जिज्ञासा प्रकट की-अरे भाई-बगुला कस होत? पड़ोसी ने झट अपना हाथ टेढ़ा करके बताया कि अस होत। सूरदास ने उसका हाथ अपने हाथ से टटोल कर देखा तो टेढ़ा पाया-झट चिल्ला कर बोला-ऐ? ऐसी टेढ़ी खीर तो हमारे बस की नायँ। यहीं से हाथ जोड़े बाबा।

और तभी से टेढ़ी खीर शब्द का प्रयोग चल पड़ा।



बोली-मुझे सोने दो जब बेटा हो जाए, तब नाम रख लेना। सेठ ने झट कहा, नहीं। मैं तो आज ही सोचकर रख लेता हूँ ताकि फिर किसी पंडित से नामकरण न कराना पड़े।

इसके बाद सेठ झटपट बोला-मैं तो मेरे पड़ोसी के नाम पर अपने बेटे का नाम कमर लाल रखूँगा। सेठानी पुनः सो गई

तो झट फिर कहा- अरी ओ भागवान! सेठानी भुनभुना कर बोली-क्यों परेशान कर रहे हो! सोने ही नहीं देते? सेठ बोला- अरी सुन तो! अगर दूसरा लड़का भी हो गया तो उसका नाम....।

सेठानी बोली-तुम्हीं रखते रहो नाम जो सूझे। मुझे तो सोने दो। तब सेठ ने दूसरे पड़ोसी के नाम पर अपने बेटे का नाम भंवर लाल रख लिया। इसी तरह दो और लड़कों के नाम पर विनोद और चन्दू रख लिया।

अब सेठ बोला-सुन री सेठानी। अगर पाँचवा लड़का भी हो गया तो उसका नाम 'चोर' रखेंगे। चोरों ने चोरी रोक दी और वे सेठ की बात सुनकर हँसने लगे। सेठ फिर बोला- अरी सेठानी सुन-जब सबसे छोटा लड़का 'चोर' क्रिकेट खेलने चला जाएगा और शाम पड़े तक घर नहीं आएगा तो उसके चारों बड़े भाइयों को अपन ढूँढने भेजेंगे।

अगर वह 'चोर' लड़का तब तक घर आ जाएगा और उसके बड़े भाई उसे ढूँढते फिर रहे होंगे तो फिर मुझे उन लड़कों को बुलाने के लिए अपने मकान की छत पर चढ़कर जोर-जोर से चिल्लाकर उन्हें बुलाना पड़ेगा।

इतना कहकर सेठ गला फाड़ कर जोर से चिल्लाया-अरे ओ कमर लाला-भंवर लाल- विनोद, चन्दू हो! जल्दी दौड़कर आओ 'चोर' घर में आ गए...। उसकी जोर की आवाज सुनकर चारों पड़ोसी अपने जवान लड़कों को साथ लेकर सेठ के घर आ गए और उन पाँचों चारों को पकड़ कर बाँध दिया।

बाद में सेठ, सेठानी से बोला-देख भागवान अगर मैं यह



तरकीब काम में न लेता तो चोर सारा पैसा और सामान ले जाते। साथ ही शोर मचाने पर वे अपन को भी मार जाते। अब बोल भागवान, अक्ल बड़ी या भैंस।

□□□

अनसुनी बात

जयमाला सोनी

एक राजा था। वह खुद को बहुत चतुर समझता था। उसने अपने राज में मुनादी फिरवा दी। जो भी कोई राजा को अनसुनी बात सुनाएगा उसे सौ सोने की मोहरें इनाम में दी जाएगी।

इनाम के लोभ में बहुत सारे लोग राजा के पास आते। ऐसी बातें सुनाते जो राजा ने कभी नहीं सुनी हों। पर राजा चालाकी से सबको बिना इनाम दिए टरका देता। जवाब में कहता यह तो मैंने तब ही सुन ली।

राजा की सारी प्रजा इस बात से खूब दुखी हुई। राजा को राह पर लाने का किसी को कोई उपाय नहीं सूझा।

उसी राज में एक गरीब बुढ़िया रहती थी। उसका एक लड़का था। बड़ा होनहार, बड़ा हाजिर जवाब। सब उसका लोहा मानते। सभी लोग बुढ़िया के पास आए। हाथ जोड़ी।

बुढ़िया को समझाया कि अब तुम्हारा लड़का ही राजा को अनसुनी बात सुना सकता है। इनाम पाकर उसके दिन फिर जाएँगे।

बुढ़िया का लड़का यह सब सुन रहा था। उसने मन में ठान ली। वह राज दरबार में ज़रूर जाएगा। बुढ़िया के रोकने पर भी वह नहीं रूका।

लड़का राज दरबार में हाज़िर हुआ। उसने राजा से कहा, मैं आपको अनसुनी बात सुनाने आया हूँ। राजा ने इजाजत दी। लड़के ने अपनी बात शुरू की। राजा जी आपके दादा जी ने मेरे दादा जी से एक हजार मोहरें उधार ली थीं। आज तक नहीं दीं।

यह बात आपने पहले कभी सुनी।



राजा चुप। सारे दरबारी दाँतों तले अँगुली दबा लड़के का चेहरा देखने लगे। लड़का निडर होकर जोर से बोला- “राजा जी आप जवाब दीजिए।”

राजा सोचने लगा कि आज बुरे फँसे। हाँ करते हैं तो एक हजार मोहरें देनी होगी। ना



कहते हैं तो भी मोहरें देनी होगी। बदनामी अलग से होगी। जनता सोचेगी राजा को याद था फिर भी उधार समय पर नहीं चुकाया।

राजा लड़के की बात से बहुत खुश हुआ। उसे सौ सोने की मोहरें इनाम में दी। साथ ही उसको राज दरबार में नौकरी देने की घोषणा भी की।